महान संत : महान व्यक्तित्व

● मुनि जयंतकुमार

हिन्दुस्तान की वशुंधरा अनेक क्रांतियों की साक्षी है। इस धरा पर सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक क्रांतियों का समय-समय पर बिगुल बजता रहा है। वर्तमान में जहां अन्ना हजारे की क्रांति युवाओं के मन-मस्तिष्क को आंदोलित किये हुए है वहीं एक ऐसे क्रांतिकारी संत ने भी क्रांति का शंखनाद किया है, पर वह क्रांति पापियों के विरुद्ध नहीं, पाप के विरुद्ध है। वे क्रांतिकारी एक शासक है, दूसरों पर अनुशासन करते हैं पर तनाशाही हुकूमत से नहीं, मदुता एवं स्नेह से। वे एक महापुरुष के तौर पर जाने जाते हैं। उनके एक इंगित पर लाखों भक्त समर्पित रहते हैं। वे ऐसे व्याख्याकार हैं, जो विभिन्न धर्मों के ग्रंथों में छिपे गूढ़ रहस्यों को प्रस्तुत कर पंथ और ग्रंथ की सीमा से ऊपर उठने की प्रेरणा देते हैं। ऐसे क्रांतिकारी महान संत है आचार्यश्री महाश्रमण।

आचार्यश्री महाश्रमण का जीवन मानवता को समर्पित है। उनका दरबार हर जाति, वर्ग के लिए हमेशा खुला रहता है। उनके सान्निध्य में पहुंचने वाला भक्त, चाहे वह कोई राजनेता हो, सामाजिक कार्यकर्ता हो, पूंजीपति हो या कोई विद्वान, उनकी सादगी एवं सौम्य आकृति को देख अभिभूत हो जाता है। आचार्यश्री के चेहरे पर आठों याम रहने वाली मुस्कान एवं स्नेह से आप्लावित आंखें श्रद्धालुओं की थकान को हर लेती है। उनका मानना हैहसंत का हृदय नवनीत से भी ज्यादा कोमल होता है। नवनीत स्वयं तप्त होने पर पिघलता है, पर संत दूसरों को तप्त देखकर ही पिघल जाते हैं। आचार्यश्री का यह केवल कथन ही नहीं, जीवन का सत्य भी है। उनकी इस महानता ने मानव-उत्थान के लिए नई सोच दी है। वे अपने समय का बहुत बड़ा भाग जनोद्धार में लगाते हैं। उनकी इस कार्य शैली ने उनको जननायक के तौर पर प्रस्तुत किया है। उनकी एक झलक पाने के लिए उमड़ती हजारों की भीड़ एवं उनके संकल्प को पूरा करने के लिए तैयार हजारों कार्यकर्ताओं की फौज इस बात की साक्षी है।

आत्म-सौन्दर्य

आचार्यश्री ने जनोद्धार में लग कर भी आत्मोत्थान को गौण नहीं किया है। वे वर्तमान का जीवन जीते हैं और सिंहावलोकन पद्धति से अपने अतीत का अवलोकन करते हुए उसे समझते है। प्रातः ४ बजे जागृत होना एवं ध्यान, जप, योगासन आदि क्रियाएं उनके आत्मोत्थान का ही अंग हैं। इससे उनका आत्म सौन्दर्य निरन्तर निखर रहा है। वे सात्त्विक तथा मित आहार के समर्थक हैं। अपने आहार पर उनका बहुत अधिक नियंत्रण है। वे बहुत स्वल्प द्रव्यों से तृप्त हो जाते हैं। अपने आचार-व्यवहार की कुशलता पर भी वे गहराई से ध्यान देते हैं। अपनी स्खलनाओं को वे आत्म नियंता बनकर दूर करते हैं। निंदा और प्रशंसा से अक्षुब्ध रहते हुए वे अपनी गति को बनाए रखने में सर्वथा समर्थ हैं।

शांतिवादिता

आचार्यश्री की नीति सदा से ही शांति प्रधान रही है। अशांति को न वे स्वयं चाहते हैं और न दूसरों के लिए पैदा करते हैं। जहां अशांति की संभावना होती है वहां वे अपने को तत्काल अलग कर लेते हैं। इसी शांतिवादी नीति का परिणाम है कि आज उनके विरोधी भी उनकी प्रशंसा करते हैं। उनके आभामण्डल की परिधि में बैठने वाला अशांत व्यक्ति भी शांति का अनुभव करता है। पेसीफिक यूनिवर्सिटी द्वारा इस शांतिवादी नीति के कारण आचार्यश्री को 'शांतिदूत' अलंकरण प्रदान किया गया है।

गहराई में

आचार्यश्री अनेक बार साधारण सी बात को भी इतनी गहराई तक ले जाते हैं कि उसमें दार्शनिक तत्त्व नवनीत की तरह ऊपर उभर आता है। साधारण से साधारण घटना भी आचार्यश्री के चिंतन का स्पर्श पाकर गंभीर बन जाती है। साधारण व्यक्ति बहुधा घटना के बहिस्तल को ही देखता है जब कि आचार्यश्री उसके अंतस्तल को देखते हैं।

परिश्रमशीलता

आचार्यश्री श्रम में विश्वास करते हैं। वे एक क्षण के लिए भी किसी कार्य को भाग्य पर छोड़कर निश्चिन्त बैठना नहीं

चाहते। वे भाग्य को बिल्कुल ही नहीं मानते हो, ऐसी बात नहीं है। वे बहुधा फरमाते हैंह्न'मैं भाग्य में विश्वास करता हूं, पर भाग्य भरोसे ही बैठ जाना उचित नहीं मानता। हम अपने पुरुषार्थ से भाग्य का निर्माण करने का प्रयास करें।' इसी कथन को चरितार्थ करते हुए वे रात दिन अपने काम में जुटे रहते हैं। दूसरों को भी इसी ओर प्रेरित करते रहते हैं। अनेक बार तो वे अपने कार्य के सामने भूख-प्यास को भी गौण कर देते हैं।

दयालुता

आचार्यश्री की प्रकृति बहुत दयालुता की है। वे बहुत शीघ्र द्रवित हो जाते हैं। संघ संचालक के लिए यह आवश्यक भी है कि विशिष्ट स्थितियों में अपनी दर्याद्रता का परिचय दें। नाना प्रकार की प्रार्थनाएं उनके सम्मुख आती रहती हैं। कुछ समय का ध्यान रखकर की गई होती है, तो कुछ ऐसे ही। कुछ मानने योग्य होती है तो कुछ नहीं। जिसकी प्रार्थना नहीं मानी जाती, उसके मन में खिन्नता होती है। यह आवश्यक भले ही न हो, पर स्वाभाविक है। इन सब स्थितियों में से गुजरते हुए भी सबका संतुलन बनाए रखना उनका कर्तव्य होता है। अपना संतुलन रखना तो सहज होता है पर उन्हें दूसरों का संतुलन भी बनाए रखना होता है। स्वभाव में दयार्द्रता हुए बिना ऐसा हो नहीं सकता।

दृढ़ता

आचार्यश्री में जितनी दयालुता अथवा मृदुता है उतनी ही दृढ़ता भी। आचार्यश्री की मृदुता, शिष्य वर्ग में जहां आत्मीयता और श्रद्धा के भाव जगाती है वहां दृढ़ता, अनुशासन और आदर के भाव। न उनका काम केवल मृदुता से चल सकता है और न दृढ़ता से। दोनों का सामंजस्य बिठाकर ही वे अपने कार्य में सफल हो सकते हैं। आचार्यश्री ने इन कामों का अपने में अच्छा सामंजस्य बिठाया है। वे एक ओर बहुत शीघ्र द्रवित होते देखे जाते हैं तो दूसरी ओर अपनी बात पर कठोरता से अमल करते हुए भी देखे जा सकते हैं।

समझाने की अपूर्व कला

आचार्यश्री में अपनी बात को समझाने की अपूर्व कला है। वे किसी के तर्क से घबराते नहीं। अपनी तर्क संपन्न वाक्यावलि से वे एक ही क्षण में पासा पलट देते है। उनको सुनने वाले उनकी इस क्षमता से जहां चकित हो जाते है वहीं तर्क करने वाले निरुत्तर। आचार्यश्री किस व्यक्ति को कौनसी बात किस प्रकार से कही जानी चाहिए, यह बहुत अच्छी तरह से जानते हैं। विद्वानों की सभा में जहां वे अपनी प्रखर विद्वत्ता की छाप छोड़ते हैं, वहीं ग्रामीणों पर सहज और सुबोध बातों की। आपकी प्रेरणाप्रद वाक्यावली से सहस्रों जन मद्य, मांस, बीड़ी-भांग, तम्बाकू आदि के सेवन से विमुख हुए हैं। अनेक बार ग्रामों में ऐसे दृश्य भी उपस्थित होते रहते है जबकि वर्षों तक मद्य तथा तम्बाकू पीने वाले व्यक्ति आचार्यश्री के सामने अपनी चिलम फोड़ देते हैं तथा अपने पास की बीड़ियों का चूरा करके फेंक देते हैं।

विचार प्रेरणा

आचार्यश्री की कार्य प्रेरणा जितनी तीव्र है उतनी ही विचार प्रेरणा भी। वे ऐसी स्थिति पैदा कर देते हैं कि जिससे व्यक्ति को उनके विचारों को जानने की उत्सुकता हो। यद्यपि वे बहुत सरल-सुबोध भाषा में बोलते हैं, फिर भी उस सुबोधता में एक ऐसा तत्त्व भी रहता है जो प्रयासगम्य होता है। उनकी सहज बात दूसरों के लिए मार्गदर्शक बन जाती है।

प्रामाणिकता

आचार्यश्री अपने कार्य में परिपूर्ण प्रामाणिकता का ध्यान रखते हैं। अपनी तथा अपने साधुओं की कार्य वृत्ति से किसी को दुविधा न हो तथा किसी वस्तु का दुरुपयोग न हो, इसमें भी वे पूर्णतः जागरूक रहते हैं। किसी पूर्वाग्रह तथा न्यूनता को आचरण में आने देना नहीं चाहते।

आचार्यश्री महाश्रमण का व्यक्तित्व आकाश सा विशाल है। समुद्र सा गहरा है। अनेकानेक रेखाएं उनके व्यक्तित्व को परिभाषित करने के लिए खींची जा सकती है। मैंने उनमें से कुछेक रेखाओं को उजागर करने के लिए अपनी लेखनी रूपी तूलिका से रंग भरा है। मुझे विश्वास है ये रेखाएं उस महान संत के व्यक्तित्व को नये दृष्टिकोण के साथ समझने में आपकी मददगार होंगी।